सत्यमेव जयते

# भारतीय ज्ञान तंत्र

## स्रोत और स्वरूप

### श्रुति साहित्य
वेद
ब्राह्मण
आरण्यक
उपनिषद्

### वेदाङ्ग एवं सूत्र साहित्य
वेदाङ्ग
अष्टाध्यायी

### पुराण एवं इतिहास
अष्टादशपुराण
रामायण
महाभारत

### आयुर्वेद साहित्य
संहिता
टीका
निघण्टु

### अन्य ज्ञान परंपराएँ
दर्शन शास्त्र
गणित एवं ज्योतिष
नाट्य, कला एवं स्थापत्य
अर्थशास्त्र एवं नीति

**राजभाषा विभाग**
**गृह मंत्रालय**
**भारत सरकार**

# भारतीय ज्ञान तंत्र : स्रोत और स्वरूप


संकल्पना

**अंशुली आर्या**

सचिव

मार्गदर्शन

**निधि पाण्डेय**

संयुक्त सचिव

सम्पादन

**भावना सक्सैना**

सहायक निदेशक



**राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार**

# भारतीय ज्ञान तंत्र : स्रोत और स्वरूप
Indian Knowledge System – Origin and Dimensions

संकल्पना : अंशुली आर्या
Concept : Anshuli Arya
मार्गदर्शन : निधि पाण्डेय
Guidance : Nidhi Pandey
सम्पादन : भावना सक्सैना
Editing : Bhawna Saxena
सम्पादन परामर्श : रघुवीर शर्मा
Editorial Consultation : Raghubir Sharma
सहयोग : दीपक कुमार
Assistance : Deepak Kumar
प्रूफ शोधन : विनोद कुमार मिश्रा
Proof Reading : Vinod Kumar Mishra
टंकण सहयोग : समरेश कुमारी, सत्यभामा
Typing Assistance : Samresh Kumari, Satyabhama

**प्रथम संस्करण – सितंबर 2026**
**© सचिव, राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार**

इस पुस्तक में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार एवं दृष्टिकोण संबंधित लेखकों के अपने हैं। इन विचारों एवं दृष्टिकोणों से सरकार अथवा राजभाषा विभाग का सहमत होना आवश्यक नहीं है।
पुस्तक में प्रकाशित किसी भी सामग्री के पुनर्प्रकाशन के लिए पूर्व अनुमति लेना आवश्यक है। किसी अंश का उद्धरण किए जाने पर उसका उपयुक्त संदर्भ देना अनिवार्य है।

**प्रकाशन – सचिव, राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार**

# समर्पण

भारत की उस अखंड ज्ञान–परंपरा के
ऋषियों, मनीषियों और ज्ञान–साधकों को,
जिन्होंने अपने तप, चिंतन और साधना से
ज्ञान को जीवन–दृष्टि तथा लोकमंगल का माध्यम बनाया।
और
उन भावी पीढ़ियों को,
जो इस अमूल्य ज्ञान–विरासत को
समझें, आत्मसात करें और
मानवता के कल्याण के लिए आगे बढ़ाएँ।

## भारतीय ज्ञान परंपरा के संबंध में

# भारत के माननीय प्रधानमंत्री के विचार

"भारत की ज्ञान परंपरा आज तक इतनी समृद्ध है, क्योंकि इसकी नींव चार मुख्य स्तंभों—संरक्षण, नवाचार, परिवर्धन और अनुकूलन—पर आधारित है।"

—अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन 'ज्ञान भारतम्'
विज्ञान भवन, नई दिल्ली। 12 सितंबर 2025

"वेदों को भारतीय संस्कृति का आधार माना गया है। हजारों वर्षों तक वेदों को पूरी प्रामाणिकता के साथ और बिना किसी त्रुटि के संरक्षित किया गया।"

—अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन 'ज्ञान भारतम्'
विज्ञान भवन, नई दिल्ली। 12 सितंबर 2025

"भारत की ज्ञान परंपरा में हमने लगातार आयुर्वेद, वास्तुशास्त्र, ज्योतिष और धातु–विज्ञान में नवाचार किया है।"

—अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन 'ज्ञान भारतम्'
विज्ञान भवन, नई दिल्ली। 12 सितंबर 2025

"हर पीढ़ी ने पुरानी ज्ञान परंपरा को संरक्षित करने के साथ–साथ उसमें कुछ नया जोड़ने का काम किया।"

—अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन 'ज्ञान भारतम्'
विज्ञान भवन, नई दिल्ली। 12 सितंबर 2025

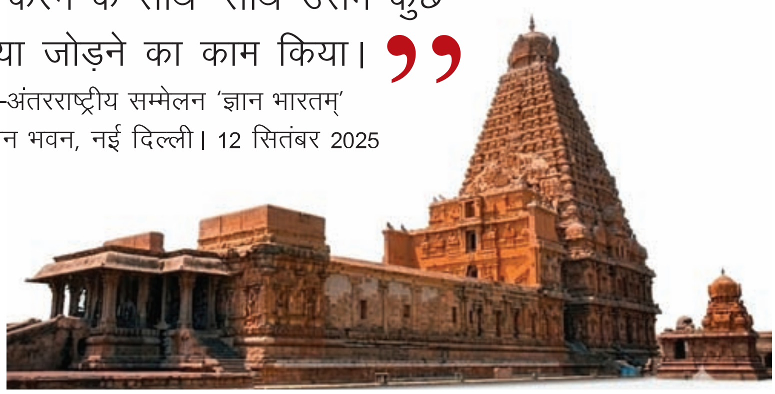

“हमारे पूर्वजों ने शब्दों को ईश्वर मानकर
जिस प्रकार प्राचीन पांडुलिपियों को सहेजा,
उससे पता चलता है कि हमारी संस्कृति के
संरक्षण को लेकर उनकी चिंता कितनी गहरी थी।”

–अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन 'ज्ञान भारतम्'
विज्ञान भवन, नई दिल्ली। 12 सितंबर 2025

“भारत की पांडुलिपियों में संपूर्ण मानवता की
विकास–यात्रा के पदचिह्न मौजूद हैं।”

–अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन 'ज्ञान भारतम्'
विज्ञान भवन, नई दिल्ली। 12 सितंबर 2025

“हमारी पांडुलिपियों में ज्ञान का बहुत बड़ा खजाना है...
आज की तकनीक का उपयोग करके आने वाली
पीढ़ियों के लिए इस ज्ञान को संरक्षित करने का काम किया जा रहा है।”

–79वाँ स्वतंत्रता दिवस संबोधन
लाल किला, नई दिल्ली। 15 अगस्त 2025

“भारत की अपनी Indian Knowledge Systems initiative,
पूरी मानवता के सामूहिक ज्ञान को भावी पीढ़ियों तक पहुँचाने के लिए एक
Global Traditional Knowledge Repository की आधारशिला बन सकती है।”

– G20 शिखर सम्मेलन, सत्र–1
नई दिल्ली। 9 सितंबर 2023

अमित शाह

गृह मंत्री एवं सहकारिता मंत्री
भारत सरकार

सत्यमेव जयते

दिनांक : सितंबर, 2026

## संदेश

मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई कि **हिंदी दिवस एवं छठे अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन (2026)** के अवसर पर राजभाषा विभाग द्वारा **'भारतीय ज्ञान तंत्र : स्रोत और स्वरूप'** पुस्तक का प्रकाशन किया जा रहा है। वेद, उपनिषद, पुराण, दर्शन, साहित्य, विज्ञान, आयुर्वेद, गणित, खगोल आदि विविध ज्ञान-विधाओं के प्रमुख स्रोतों एवं उनके स्वरूप का संक्षिप्त और सारगर्भित परिचय प्रस्तुत करने वाली यह पुस्तक भारतीय ज्ञान-परंपरा को समझने तथा नई पीढ़ी को अपनी समृद्ध ज्ञान-विरासत से परिचित कराने का महत्वपूर्ण प्रयास है।

भारत की सभ्यता की निरंतरता उसकी समृद्ध ज्ञान-संपदा और भारतीय भाषाओं में संचित ज्ञान-परंपरा से जुड़ी है। हमारी भाषाएँ केवल संवाद का माध्यम नहीं, बल्कि ज्ञान, अनुभव, चिंतन और सांस्कृतिक स्मृति की संवाहक हैं। **'भारतीय ज्ञान तंत्र : स्रोत और स्वरूप'** जैसे प्रयास हमारी इस अमूल्य विरासत के संरक्षण, अध्ययन और आधुनिक संदर्भों में पुनर्प्रयोग की दिशा में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं। भारतीय ज्ञान-परंपरा की विशेषता यह भी रही है कि ज्ञान को सदैव मानव कल्याण और समाज के हित से जोड़ा गया है।

**माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी** के सक्षम नेतृत्व में भारतीय भाषाओं, ज्ञान-संपदा और सांस्कृतिक विरासत के संरक्षण एवं संवर्धन को नई गति मिली है। आधुनिक तकनीक के माध्यम से भारतीय भाषाओं और प्राचीन पांडुलिपियों एवं दस्तावेजों के संरक्षण पर विशेष बल दिया जा रहा है। 'विकसित भारत' के निर्माण का संकल्प हमारी समृद्ध ज्ञान-परंपरा और सांस्कृतिक आत्मविश्वास से जुड़ा है। अपनी जड़ों से जुड़े रहते हुए आधुनिक ज्ञान-विज्ञान और तकनीक को अपनाना ही भारत को आत्मनिर्भर एवं विकसित राष्ट्र बनाने का सशक्त आधार है।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि यह कृति हमारी युवा पीढ़ी को अपनी सांस्कृतिक एवं बौद्धिक विरासत से जोड़कर एक समर्थ व आत्मनिर्भर भारत के निर्माण में नई प्रेरणा प्रदान करेगी। मैं इस महत्वपूर्ण संकलन के प्रकाशन हेतु राजभाषा विभाग, विद्वान लेखकों और संपादकीय टीम को बधाई देता हूँ तथा पुस्तक के व्यापक प्रसार की कामना करता हूँ।

**जय हिन्द!**

आपका

(अमित शाह)

कार्यालय : गृह मंत्रालय, कर्तव्य भवन–03, नई दिल्ली–110001
दूरभाष : 23092462, 23094686, फैक्स : 23094221
ई–मेल : hm@nic.in

नित्यानन्द राय
NITYANAND RAI

गृह राज्य मंत्री
भारत सरकार
कर्तव्य भवन–3, नई दिल्ली – 110001
MINISTER OF STATE FOR
HOME AFFAIRS
GOVERNMENT OF INDIA
KARTAVYA BHAVAN-3,
NEW DELHI - 110001

## संदेश

भारत की पहचान केवल उसकी प्राचीनता में नहीं, बल्कि उसकी निरंतर विकसित होती ज्ञान-परंपरा में भी है। हजारों वर्षों में हमारे मनीषियों, आचार्यों और विद्वानों ने जीवन और जगत से जुड़े विविध विषयों पर चिंतन किया और अपने अनुभवों को ग्रंथों, परंपराओं तथा व्यवहार के माध्यम से आगे बढ़ाया। यही कारण है कि भारतीय ज्ञान-परंपरा में दर्शन और अध्यात्म के साथ गणित, ज्योतिष, आयुर्वेद, भाषा-विज्ञान, साहित्य, कला, स्थापत्य, कृषि, शासन, नीति और पर्यावरण जैसे अनेक विषयों का समृद्ध ज्ञान मिलता है।

माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के नेतृत्व में आज भारत अपनी सांस्कृतिक विरासत और ज्ञान-संपदा को नए आत्मविश्वास के साथ विश्व के सामने प्रस्तुत कर रहा है। 'विरासत पर गर्व' और 'गुलामी की मानसिकता से मुक्ति' का आह्वान हमें अपनी परंपराओं को नए दृष्टिकोण से जानने और समझने की प्रेरणा देता है। आत्मनिर्भर भारत की भावना भी केवल आर्थिक स्वावलंबन तक सीमित नहीं है; इसमें अपने ज्ञान, क्षमताओं, भाषाओं और सांस्कृतिक मूल्यों के प्रति विश्वास भी शामिल है।

**'भारतीय ज्ञान परंपरा: स्रोत और स्वरूप'** पुस्तक इसी व्यापक दृष्टि को सामने लाने का एक सराहनीय प्रयास है। यह पुस्तक भारतीय ज्ञान-परंपरा की विभिन्न शाखाओं, उनके प्रमुख स्रोतों और उनके विकास की झलक प्रस्तुत करती है। एक ही स्थान पर ज्ञान के इतने विविध क्षेत्रों का परिचय पाठकों को इस बात का अनुभव कराता है कि भारतीय परंपरा में ज्ञान को जीवन के किसी एक क्षेत्र तक सीमित नहीं माना गया, बल्कि उसे समग्र जीवन-दृष्टि के रूप में विकसित किया गया।

आज की युवा पीढ़ी के लिए अपनी इस विरासत को जानना विशेष रूप से आवश्यक है। अपनी जड़ों से परिचित होकर ही हम अपनी परंपरा के मूल्यवान पक्षों को समझ सकते हैं और उन्हें आधुनिक समय की आवश्यकताओं के अनुरूप आगे ले जा सकते हैं। भारतीय ज्ञान-संपदा का अध्ययन हमें अतीत से जोड़ने के साथ भविष्य के निर्माण के लिए भी नई दृष्टि प्रदान कर सकता है।

मुझे विश्वास है कि यह पुस्तक विद्यार्थियों, शोधार्थियों, शिक्षकों और भारतीय ज्ञान-परंपरा में रुचि रखने वाले सामान्य पाठकों के लिए उपयोगी सिद्ध होगी तथा अपनी समृद्ध ज्ञान-विरासत के प्रति जिज्ञासा और गौरव की भावना को बढ़ाएगी।

इस महत्वपूर्ण प्रकाशन के लिए राजभाषा विभाग को मेरी हार्दिक बधाई और शुभकामनाएँ। आशा है कि ऐसे प्रयास भारतीय ज्ञान-परंपरा को व्यापक समाज तक पहुँचाने और नई पीढ़ी को उससे जोड़ने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएँगे।

**जय हिंद!**

**(नित्यानन्द राय)**

नई दिल्ली।
28 अगस्त, 2026

Office Tel. : 011-24010311, 24010312

बंडी संजय कुमार
**BANDI SANJAY KUMAR**

गृह राज्य मंत्री
भारत सरकार
**MINISTER OF STATE FOR HOME AFFAIRS GOVERNMENT OF INDIA**

International Year of Cooperatives 2025

सत्यमेव जयते

स्वच्छ भारत

## संदेश

भारत की पहचान उसकी समृद्ध और निरंतर प्रवाहित ज्ञान-परंपरा में निहित है। हमारी ज्ञान-दृष्टि ने जीवन के लगभग प्रत्येक आयाम-दर्शन, भाषा, साहित्य, गणित, चिकित्सा, विज्ञान, कला, समाज और प्रकृति-पर गहन चिंतन किया है। यह बहुआयामी विरासत भारत की सभ्यतागत शक्ति का महत्वपूर्ण आधार है।

माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी ने अपनी विरासत पर गर्व, गुलामी की मानसिकता से मुक्ति और आत्मनिर्भर भारत के संकल्प को राष्ट्र निर्माण की दिशा में महत्वपूर्ण आधार प्रदान किया है। ऐसे समय में अपनी ज्ञान-परंपरा के विविध आयामों को समझना और उन्हें नई पीढ़ी तक पहुँचाना विशेष रूप से प्रासंगिक है।

'भारतीय ज्ञान तंत्र : स्रोत और स्वरूप' पुस्तक भारतीय ज्ञान-परंपरा की विभिन्न शाखाओं और उनके प्रमुख स्रोतों का परिचय कराते हुए पाठकों को इस विशाल ज्ञान-संसार की व्यापक झलक प्रदान करती है। यह पुस्तक हमारी परंपरा की गहराई और उसकी विविधता को समझने का अवसर देती है तथा आधुनिक संदर्भ में उसके महत्व पर विचार के लिए प्रेरित करती है।

मैं इस महत्वपूर्ण प्रकाशन के लिए राजभाषा विभाग को बधाई देता हूँ और विश्वास करता हूँ कि यह पुस्तक विशेषकर युवा पीढ़ी में अपनी ज्ञान-विरासत के प्रति जिज्ञासा, गौरव और आत्मविश्वास की भावना को सुदृढ़ करेगी।

जय हिंद!

स्थानः नई दिल्ली

(बंडी संजय कुमार)

Office : Room No. 35044, Kartavya Bhawan-3, Janpath, New Delhi-110 001 Tel. : 24010331, 24010332

# भारतीय ज्ञान तंत्र : स्रोत और स्वरूप

## विषय क्रम


| क्र. सं. | शीर्षक | लेखक का नाम | पृष्ठ सं. |
|---|---|---|---|
| | **प्रस्तावना और पद्धति** | | |
| 1. | भारतीय ज्ञान तंत्र–सभ्यता की स्मृति से भविष्य की दिशा | श्रीमती अंशुली आर्या | 1 |
| 2. | भारतीय ज्ञान–परंपरा : एक जीवंत विरासत | डॉ. निधि पाण्डेय | 5 |
| 3. | भारतीय ज्ञान–परम्परा : संवाद और पुनर्पुष्टिकरण | डॉ. कुमुद रामानंद बंसल | 8 |
| | **ग्रंथ परंपरा** | | |
| 4. | वेद – ज्ञान के शाश्वत अमृत बिन्दु | आचार्य अनिल शास्त्री | 21 |
| 5. | ब्राह्मणग्रंथ – वेद ज्ञान की व्याख्या और विस्तार | आचार्य अनिल शास्त्री | 44 |
| 6. | भारतीय ज्ञान परंपराः आरण्यक तथा उपनिषद | डॉ. गौरी माहुलीकर | 49 |
| 7. | वेदांगों की परंपरा और महत्त्व | प्रो. नंद किशोर | 58 |
| 8. | स्मृति और धर्मशास्त्र–भारतीय जीवन–दर्शन एवं सामाजिक चिंतन की परंपरा | श्री दीपक कुमार | 70 |
| 9. | पुराणों का वैचारिक प्रदेय | प्रो. देवेश मिश्र | 78 |
| 10. | भारतीय ज्ञान परंपरा में श्रीमद्भागवत का स्थान एवं महत्त्व | पू. श्री गोपेश्वर दास | 102 |
| 11. | भगवद्गीता– जीवन की कालजयी मार्गदर्शक | श्रीमती कृष्णा गंगा देवीदासी | 109 |
| | **दार्शनिक प्रणालियाँ** | | |
| 12. | दर्शन शास्त्रों का परिचय एवं विषय वस्तु | आचार्य अनिल शास्त्री | 119 |
| 13. | वेदान्त की परंपरा | डॉ. अनूप पति तिवारी | 127 |

| क्र. सं. | शीर्षक | लेखक का नाम | पृष्ठ सं. |
|---|---|---|---|
| 14. | अद्वैत वेदान्त दर्शन : आधुनिक मानव जीवन में इसकी उपयोगिता | श्री रघुवीर शर्मा | 146 |
| **विज्ञान परंपरा** | | | |
| 15. | आयुर्वेदः ज्ञान परंपरा, साहित्य और विकास | वैद्य डॉ. अभिजीत सराफ | 163 |
| 16. | शास्त्रों एवं ग्रंथों के आलोक में योग विज्ञान | डॉ. सौरभ उपाध्याय, वाराणसी | 175 |
| 17. | भारतीय गणित एवं खगोल विज्ञान की परम्परा | प्रो. उमाशंकर | 189 |
| 18. | भारतीय गणित परंपरा : समकालीन प्रासंगिकता | डॉ. विनय रवींद्रनाथ नायर | 219 |
| 19. | भारतीय वास्तु, शिल्प एवं पर्यावरणीय ज्ञान | शिवानी प्रिया, प्रो. गिरीश नाथ झा | 232 |
| **समाज, राज्य और नीति** | | | |
| 20. | भारतीय ज्ञान परंपरा में धर्म और सामाजिक व्यवस्था और संबंधित ग्रंथ | डॉ. गरिमा संजय दुबे | 251 |
| 21. | भारतीय ज्ञान परंपरा में राज्य, अर्थव्यवस्था एवं शासनतन्त्र | प्रो. अभिराज राजेंद्र मिश्र | 264 |
| 22. | भारतीय ज्ञान परंपरा में नीति ग्रंथों का महत्त्व | श्रीमती सुनीता शर्मा | 278 |
| **साहित्य, कला और संस्कृति** | | | |
| 23. | गँवई मिट्टी की गंध लोकधारा से ज्ञानधारा तक | डॉ. शुभंकर मिश्र | 286 |
| 24. | लघुचित्रः भारतीय ज्ञान परंपरा का दृश्य रूप | डॉ. नर्मदा प्रसाद उपाध्याय | 296 |
| **समांतर ज्ञान परंपरा** | | | |
| 25. | भारतीय ज्ञान प्रणाली में बौद्ध ग्रंथों की प्रासंगिकता | प्रो. राजेश रंजन | 309 |
| 26. | जैन धर्म की प्राचीनता | श्रीमती सुरेखा जैन | 326 |